रंगमंच को समाज की अभिव्यक्ति का माध्यम कहा जाता है। रंगमंच के माध्यम से समाज के विविध विषय प्रकाश में आते हैं और प्रभावी से रूप इन विषयों को सामने लाने हेतु रंग तत्व महत्वपूर्ण कारक होते हैं। इन्हीं कारकों में एक महत्वपूर्ण अंग मंच आलोकन, प्रकाश विन्यास, प्रकाश व्यवस्था है।

प्रकाश का उपयोग मंच प्रकाश और चरित्र, दृश्यावली मॉडलिंग कला इत्यादि के लिए होता है, जिसे स्टेज प्रकाश के रूप में भी जाना जाता है इसकी भूमिका मंच की समग्र अवधारणा के अनुसार प्रदर्शन की आवश्यकताओं पर आधारित है, मंच प्रकाश प्रौद्योगिकी और उपकरणों के उपयोग और अभिनेताओं के साथ खेलने के साधन, मंच पर दृश्य छवि को आकार देने के लिए होता है।

प्रकाश विन्यास जिसका जिक्र, जिसकी महत्वता का जिक्र भारतीय नाट्य परंपरा के आदि ग्रन्थ भरत के नाट्यशास्त्र में भी देखने को मिलता है. प्रारंभ में प्रकाश व्यवस्था के लिए जहाँ दीप, मशालों इत्यादि का प्रयोग किया जाता था वहीं आज यह इसका विकसित रूप देखने को मिलता है. आज प्रकाश विन्यास रंगमंच का सहायक तत्व न रहकर इसके केंद्र में आ चुका है. अत्याधुनिक तकनीकी उपकरणों के माध्यम से मंच पर परिकल्पना से परे दृश्यों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया जाता है| आज लाईट्स के माध्यम से प्रभावी दृश्य तैयार किए जाते हैं. मंच पर रंगों का भी अपना एक दार्शनिक पक्ष होता है और प्रत्येक रंग शब्द विस्तार करने में सहायक होते हैं।

रंगमंच पर प्रकाश व्यवस्था का सिर्फ इतना ही काम नहीं है कि नाट्य प्रदर्शन जैसी समन्वित अभिव्यक्ति के विभिन्न अंगों के योगदान को दिखाये बल्कि प्रकाश व्यवस्था वह चीज़ है, जो विभिन्न

अंगों के योगदान को समन्वित करती है। प्रकाश व्यवस्था द्वारा अभिनेता, दृश्यबंध-उपकरण, वेशभूषा, इत्यादि सिर्फ दिखते ही नहीं बल्कि एक विशेष प्रकार से दिखते है, जिससे नाट्य-प्रदर्शन के विभिन्न अंगों की विशेषताएँ समन्वित हो जाती है और पूरा नाट्य प्रदर्शन एक कलात्मक इकाई बन जाता है।

भारतीय नाट्यशास्त्र में रंगदीपन की पद्धति यूरोपीय रंगदीपन पददती से भिन्न थी। यूनानी नाट्यशालाओं में दिन में ही नाटक होते थे। इसलिए वहाँ रंगदीपन की समस्या बहुत जटिल नहीं हो पायी थी। रोम के रंगमंच भी इसी प्रकार के थे। रंगमंच पर प्रकाश विधान की आवश्यकता का प्रथम महत्व समझाने वाला सर्वप्रथम व्यक्ति इतालिया निवासी सर्लियों था। उसने वर्णन किया कि मैंने रंगीन पानी की शीशियों के पीछे मोमबत्तीय और मशाल रखकर दृशय सज्जा के बीच से प्रकाश डालने का प्रयत्न किया और प्रकाश को बढ़ाए रखने के लिए उन बत्तियों के प्रतिबिंबक रूप में तालियाँ और तश्तरियाँ लगाई थी। इस प्रकार के प्रकाश का प्रयोग सर्वप्रथम इटली के पेलेडियों थियेटर में किया गया था।

आदिम मानव नें अपने शिकार की भावाव्यक्ति अनुकरण की शुरूआत जिस प्रकार की और यह नाटक के रूप में किस प्रकार विकसित हुआ, यह एक प्रकार से रंगमंच की ही शुरूआत थी। शिकार खेलने के दौरान वह शिकार को बीच में आग जलाकर अपने शिकर को पकाते थे, और उसके चारों ओर गोल घूम कर चक्कर लगाकर तरह-तरह की आवाजें निकालते थे।इस प्रकार प्रकाश की

उपयोगिता रंगमंचमें प्रवेश हुई। इसके बाद जैसे –जैसे रंगमंच विकसितहुआ वैसे-वैसे ही प्रकाश की आवश्यकता और उपयोगिता महसूस हुई, और इसका विकास हुआ।

आधुनिक रंग आलोकन में नित होते बदलाव, नवीन उपकरणों के विकास एवं तकनीकि माध्यमों की बढ़ती उपलब्धता ने आज रंगमंच की नयी भाषा रंग भाषा को गढ़ा है। आज मंच पर प्रकाश व्यवस्था के माध्यम से कैनवास में रंग भरने जैसा पेंटिंग का निर्माण कर दिया जाता है। दर्शक के समक्ष अत्याधुनिक प्रकाश स्रोतों के माध्यम से प्रभावी दृश्यों का निर्माण किया जाता है। मशाल, दीपों से शुरू हुआ रंग आलोकन का सफर आज एलईडी पार, स्पॉट लाइट जैसे स्रोतों तक आ पहुंचा है और यह विकास जारी है।

प्रकाश विन्यास की दृष्टि से महाराष्ट्र का विदर्भ क्षेत्र चर्चित है। विदर्भ का अपना समृद्ध कलात्मक इतिहास है। समृद्ध रंग परंपरा वाले विदर्भ के 11 जिलों में से तीन जिले अमरावती, नागपुर, वर्धा, अकोला, चंद्रपुर का नाम रंगमंच की अत्यधिक गतिविधियों के लिए जाना जाता है. यहाँ का रंगमंच अपनी परंपरा और प्रयोग के लिए जाना जाता हैं. रंगमंच का यह प्रयोग कथ्य से लेकर रंगमंच के सहायक तत्व वस्त्र विन्यास, प्रकाश विन्यास इत्यादि तक को विशिष्ट बनाता है।

वर्त्तमान में विदर्भ क्षेत्र में कई प्रकाश विन्यासक है, जिनके प्रभावी कार्य का क्षेत्र न केवल विदर्भ बल्कि विदर्भ से बाहर के क्षेत्रों में भी चर्चित है. आज विदर्भ के रंगमंच में अत्याधुनिक रंग उपकरणों का प्रयोग किया जाता है, जिससे यह क्षेत्र प्रकाश विन्यास के मामले में देश के अन्य क्षेत्रों में भी अपनी पहचान स्थापित कर रहा है।

अंततः कहा जाए तो प्रकाश व्यवस्था आज रंगमंच का एक अनिवार्य अंग है या यूं कहे कि आधुनिक रंगमंच की नयी रंग भाषा गढ़ने का मूल आधार भी विकसित होते प्रकाश स्रोत है। वैज्ञानिक विकास ने रंगमंच को प्रभावी बनाने की दिशा में अत्यंत सहयोग दिया। प्रकाश मंच को जीवंत कर देता है तथा समय परिदृश्य का निर्माण करा कर दर्शकों को तुरंत नाटक से जोड़ देता है।

आज जहां आधुनिक रंगमंच में मंचन को लेकर हर रोज़ प्रयोग हो रहे हैं, जो बिना लाइट के सोचा भी नहीं जा सकता। एक अहम भूमिका जो मंच प्रकाश को लेकर जोड़ा जा सकता है वो है कि दर्शक ज़्यादातर अपने काम के बाद मानसिक संतुष्टि के लिए नाटक या फिल्म देखना पसंद करते हैं इसलिए मंचन में अगर प्रकाश नहीं होता तो शायद दुनियाँ का एक बड़ा वर्ग नाटक से अछूता रह जाता। नित होते बदलावों ने प्रकाश व्यवस्था के माध्यम से रंगमंच में एक क्रांतिकारी परिवर्तन किया।